

रूसमें वेदका अध्ययन और अनुसंधान

(श्रीउदयनारायण सिंहजी)

वैदिक धर्म भारतमें धार्मिक विश्वासोंकी सबसे प्राचीन प्रणाली है, जिसने इस उपमहाद्वीपमें प्रकट होनेवाली धार्मिक प्रवृत्तियों और दार्शनिक शिक्षाओंपर गहनतम प्रभाव डाला है। उन्नीसवीं शताब्दीके अन्त तथा बीसवीं शताब्दीके प्रारम्भमें रूसी अध्येताओं और विद्वानोंका ध्यान वेदोंकी ओर आकर्षित हुआ और उन्होंने उसका अध्ययन प्रारम्भ किया। इस बृहत् और महत् कार्यका समारम्भ सुप्रसिद्ध रूसी साहित्यकार और मानवतावादी लियो टालस्टॉयने किया, जिनका भारतके राष्ट्रपिता महात्मा गाँधीसे सम्पर्क—व्यवहार भी था और महात्मा गाँधीके प्रारम्भिक जीवनको उन्होंने बहुत कुछ प्रभावित भी किया था। गाँधीजी उन्हें अपना

गुरु मानते थे। लियो टालस्टॉय एक दार्शनिक और मानवतावादी विचारक भी थे, जिन्होंने रूसकी जनतामें भारतीय साहित्य, दर्शन और संस्कृतिमें गहरी अभिरुचि पैदा की थी। इस महान् संतका ध्यान सर्वप्रथम वेदोंके समृद्ध ज्ञान-भंडारकी ओर आकृष्ट हुआ। टालस्टॉयने वेदोंका अध्ययन यूरोपीय भाषाओंके माध्यमसे नहीं, वरन् उस समय भारतके 'गुरुकुल काँगड़ी' नामक स्थानसे प्रकाशित उस वैदिक मैगजिन (मासिक पत्रिका)—के माध्यमसे किया, जो नियमितरूपसे भारतसे उनके निवास-स्थान 'यास्थाना पोल्याना' पहुँचा करती थी। पत्रिकाके प्रकाशक तथा सम्पादक प्रोफेसर रामदेव टालस्टॉयके भारतीय मित्रोंमें थे।

टालस्टॉयका योगदान

लियो टालस्टॉयने वेदोंमें संनिहित गहन ज्ञानकी सराहना करते हुए इस गौरव-ग्रन्थके उन अंशोंको विशेष महत्त्व दिया, जिनमें नीतिशास्त्रकी बातें बतायी गयी हैं। मानवतावादी होनेके नाते टालस्टॉयने मानव-प्रेमसे सम्बन्धित वेदकी ऋचाओंका भी अत्यधिक रुचिके साथ अध्ययन किया तथा उनकी अनेक बातोंको स्वीकार भी किया। भारतीय पौराणिक ग्रन्थोंकी कलात्मकता तथा काव्य-सौन्दर्यने उन्हें विशेष प्रभावित किया। वेद तथा उपनिषद्की प्रशंसामें उन्होंने अपनी अमर कृतियोंमें अनेक स्थानोंपर किसी-न-किसी रूपमें अवश्य ही कुछ पंक्तियाँ लिखी हैं। उदाहरणार्थ 'कला क्या है?' शीर्षक-निबन्धमें उन्होंने लिखा है—'शाक्य मुनिके इतिहास तथा वेदमन्त्रोंमें अत्यधिक गहरे विचार प्रकट किये गये हैं और चाहे हम शिक्षित हों अथवा नहीं, ये हमें अब भी प्रभावित करते हैं।' टालस्टॉयने न केवल वेदोंका अध्ययन ही किया, वरन् उनकी शिक्षाओंका रूसमें प्रचार भी किया। उन्होंने अपनी कृतियोंमें यत्र-तत्र इसके उद्धरण भी प्रस्तुत किये हैं। उनकी कुछ उक्तियोंके भावानुवाद इस प्रकार हैं—

'उस प्रकारके धन (ज्ञान)-का संग्रह करो, जिसे न तो चोर चुरा सकें और न जुल्म करनेवाले छीन ही सकें। दिनमें इस प्रकार काम करें कि रातमें नींद आरामसे ले सकें। जो कुछ भी नहीं करता, वह केवल बुराई करता है। वास्तवमें वही व्यक्ति शक्तिशाली है, जो अपनेपर विजय प्राप्त कर लेता है।'

—टालस्टॉयकी ये उक्तियाँ वेदकी गहन शिक्षाओंके अधिक निकट हैं। टालस्टॉयने जीवनपर्यन्त भारतीय साहित्य और संस्कृतिमें रुचि प्रकट की। 'ललित-विस्तर' तथा गीता और शंकराचार्यकी दार्शनिक रचनाओंका उन्होंने अध्ययन किया। 'ऋग्वेद'के सम्बन्धमें उन्होंने लिखा—'वेदोंमें उदात्त भावनाएँ निहित हैं।' भारतके अनेक लेखकोंपर टालस्टॉयका गहरा प्रभाव पड़ा था। पं० जवाहरलाल नेहरूने लिखा है—'टालस्टॉय उन लेखकोंमेंसे हैं, जिनका नाम और जिनकी रचनाएँ भारतमें सर्वाधिक प्रसिद्ध हैं।'

परवर्ती साहित्यपर प्रभाव

रूसके अन्य अनेक अध्येताओंने वेदोंका अध्ययन एवं मनन किया है, जिनमें मि० म० बोंगर्द लेविनका प्रमुख रूपसे उल्लेख किया जा सकता है। वैदिक साहित्यके बारेमें उन्होंने अपना विचार व्यक्त करते हुए लिखा है—'वेद भारतके प्राचीन ग्रन्थ हैं, यद्यपि इनकी विषय-वस्तु बहुत व्यापक है और उसमें समाविष्ट अंश भिन्न-भिन्न ऐतिहासिक कालोंके हैं, तथापि प्राचीन परम्पराके अनुसार उन्हें अनेक समूहोंमें विभाजित किया जाता है। यथा—'ऋग्वेद' (ऋचा-संकलन), 'सामवेद' (मन्त्र-संकलन), 'यजुर्वेद' (स्तुति तथा यज्ञ-विधि-संकलन) और 'अथर्ववेद' (मन्त्र एवं जादूमन्त्र-संकलन)। इनमें सबसे प्राचीन 'ऋग्वेद' है, इसमें विश्वोत्पत्ति तथा विवाह-विषयक ऋचाओंसहित अनेक विषयोंपर १०२८ ऋचाएँ हैं। रूसी विद्वान्ने यह निष्कर्ष निकाला है कि वेदोंमें नाट्य-तत्त्व पाये जाते हैं, जिनका साहित्यके उत्तरवर्ती कालोंमें अधिक पूर्णताके साथ परिष्करण होता है। इसका एक अत्यन्त रोचक उदाहरण 'ऋग्वेद' का तथाकथित 'संवाद-स्तोत्र' है। इसके सम्बन्धमें यह कहा जाता है कि ये मात्र धार्मिक मन्त्र नहीं थे, वरन् नाट्य-प्रस्तुतियोंके लिये रचे गये थे। 'ऋग्वेद' की कुछ कथाओंने उत्तरवर्ती कालके लेखकोंको नाट्य-रचनाओंके लिये सामग्री प्रदान की। उदाहरणके लिये महाकवि कालिदासने अपने नाटक 'विक्रमोर्वशीय'का आधार पुरुरवा और उर्वशीके प्रेमकी वैदिक कथाको बनाया है। इससे यह निष्कर्ष सहजमें ही निकाला जा सकता है कि वैदिक साहित्यका भारतके परवर्ती साहित्यपर गहरा प्रभाव पड़ा था।

भारत-विद्या-सम्बन्धी अनुसंधान

भारतकी विद्याके सम्बन्धमें अध्ययन और अनुसंधान करनेवालोंमें रूसी भाषाविद् अकादमीशियन फोर्तुनातोव (सन् १८४८—१९१४)-का विशेष रूपसे उल्लेख किया जा सकता है। मास्को विश्वविद्यालयकी पढ़ाई पूरी करनेके बाद सन् १८७२-७३ में उन्होंने यूरोपके जाने-माने संस्कृतविदों ट्यूविंगनमें रोथ, बर्लिनमें बेबेरे एवं पेरिसमें बेर्नसे शिक्षा पायी। मध्ययुगीन भाषाओंका भी उन्होंने अध्ययन किया। सन् १८७५में प्रकाशित उनका शोधकार्य—

‘सामवेद-आरण्यक-संहिता’ के पाठका प्रकाशन था, जिसके साथ रूसी-अनुवाद, व्यापक टिप्पणियाँ, अनुसंधान-कार्य तथा यूरोपीय भाषाओंके तुलनात्मक व्याकरणकी कुछ समस्याओंपर परिशिष्ट भी था। यूरोपमें ‘सामवेद’ सदा उसके ‘आरण्यकों’के बिना छापा जाता था। इस प्रकार फोर्तुनातोव ‘सामवेद’के आरण्यकोंके प्रथम रूसी प्रकाशक थे। उनके इस ठोस एवं गहन अनुसंधान-कार्यमें वैदिक साहित्यका सिंहावलोकन तथा उसके इतिहासके कुछ प्रश्नोंपर प्रकाश डाला गया था। विशेषतः यजुर्वेदके मन्त्रोंमें और यज्ञ-कृत्योंके बीच सह-सम्बन्धके प्रश्नपर लेखकने यह निष्कर्ष निकाला है कि यज्ञ-कृत्य सदा ही उच्चरित मन्त्रोंसे अधिक पुराने नहीं होते थे। उलटे कतिपय कृत्योंकी व्याख्या वैदिक पाठोंके आधारपर ही की जा सकती है। उन्होंने ‘सामवेद’ की टीकाओं और उसके भाष्योंकी ओर विशेष ध्यान देते हुए इंगित किया है कि कुछ मामलोंमें ‘सामवेद’ के मन्त्र ‘ऋग्वेद’ के मन्त्रोंसे अधिक पुराने हैं। फोर्तुनातोवने यह लिखा है— ‘वर्तमान समयमें वैदिक ग्रन्थोंके प्रकाशनका कार्यभार उस पाठको प्रस्तुत करना है, जो वास्तवमें है और जहाँतक हम पता लगा सकते हैं, प्राचीन युगमें भी वह अस्तित्वमें था।’

वैदिक समाज

एक अन्य रूसी भारतीय विद्याविद् अकादमीशियन बसेवोलोदमिल्लेर (सन् १८४८—१९१३) भी पेजोवके शिष्य थे, जिन्होंने अपनी शिक्षा बर्लिनके बेबेरे और ट्यूबिंगनके रॉथके निर्देशनमें वेदों और ‘अवेस्ता’ का अध्ययन करते हुए जारी रखा। प्राग नामक नगरमें काम कर रहे ‘ऋग्वेद’के प्रसिद्ध विशेषज्ञ अल्फ्रेड लुडविगके साथ विशेषतः उनके घनिष्ठ सम्बन्ध थे। मिल्लेरका शोध-प्रबन्ध ‘आर्य मिथक और प्राचीनतम संस्कृतिके साथ उनका सम्बन्ध—एक रूपरेखा भाग—१’ शीर्षकसे सन् १८७६में प्रकाशित हुआ। इस ग्रन्थकी योजना व्यापक थी, जिसमें न केवल वैदिक साहित्य और मिथकोंपर, वरन् वैदिक समाजपर भी सामग्री थी। कुछ हदतक मिल्लेरका यह ग्रन्थ जर्मन विद्वान् हेनरिक जिमरकी प्रसिद्ध पुस्तक प्राचीन भारतीय जीवनकी पूर्वगामी थी। रूसी विद्वान्ने वैदिक पाठोंके आधारपर आर्योंके सामाजिक जीवन, उनके परिवार, शिल्प, शस्त्र-अस्त्र आदिका विवरण

प्रस्तुत किया। वेदोंमें प्रतिबिम्बित अवधारणाओंपर उन्होंने यूनानी, रोमन और ईरानी मिथकोंसे तुलना की है। मिल्लेरके ग्रन्थमें कतिपय वैदिक श्लोकोंका अनुवाद और उनकी विवेचना की गयी है। यह स्मरणीय है कि अनेक वर्षोंतक मिल्लेर मास्को विश्वविद्यालयमें संस्कृत पढ़ाते रहे।

ऋचाओंकी विशेषता

एक अन्य रूसी भारतीय विद्याविद् दमीत्री ओव्यानिनको-कुलिकोव्स्की (सन् १८५३—१९२०) ने भी वैदिक साहित्यके क्षेत्रमें कार्य किया है। उन्होंने ओदेसामें इ० यागिच, पीटर्सबर्गमें प्रोफेसर मिनाएव तथा पेरिसमें बेर्गेनसे संस्कृत सीखी। उन्होंने ‘अवेस्ता’ का भी अध्ययन किया। वे खाकॉव विश्वविद्यालयमें संस्कृतके अध्यापक भी थे। उन्होंने वैदिक साहित्यपर कई पुस्तकें लिखीं, यथा—‘सोमपुष्प लानेवाले गरुडका वैदिक मिथक—वाणी और उन्मादकी अवधारणाके प्रसंगमें’, ‘भारोपीय युगके सुरादेवोपासना पंथोंके अध्ययनका प्रयास’ और ‘प्राचीन भारतमें वैदिक युगमें सोमदेवकी उपासना ओदेस्सा’ (सन् १८८४)। अन्तिम पुस्तकमें लेखकद्वारा वैदिक सोमदेवकी ईरानी पंथोंके अहोम (होम) और यूनानी डायोनिससकी उपासनासे व्यापक तुलना की गयी है तथा मिथकोंके अध्ययनमें सौर और ऋतु-सम्बन्धी धाराओंके प्रमुख प्रतिनिधियोंके विचारोंकी आलोचना की गयी है। कुलिकोव्स्कीकी मान्यता थी कि वैदिक ऋचाओंमें वाणी अपनी लयबद्धताके कारण द्रव-सी प्रवाहित होती थी। लयबद्ध वाणीका आदिम मानवके मानसपर प्रबल प्रभाव पड़ता था और इससे उसकी चिन्तन और सृजन-शक्ति जाग्रत् होती थी। लेखकने ‘ऋग्वेद’-की ऋचाओंके भाषा-वैज्ञानिक विश्लेषणकी सहायतासे पुरातन भाषा और चिन्तनकी विशिष्टताओंका पता लगानेकी चेष्टा की थी। सन् १८८७ में कुलिकोव्स्कीने एक अन्य पुस्तक ‘वैदिक युगमें हिन्दुओंकी अग्निपूजाके इतिहासपर कुछ विचार’ शीर्षकसे प्रकाशित की। इसमें उन्होंने वेदोंमें अग्निके तीन रूप निर्धारित किये—गृहपति, विशाम्पति और वैश्वानर। उनके विचारमें यह विभेदन केवल मिथकीय लक्षणोंके अनुसार नहीं हुआ, वरन् इसका सामाजिक आधार था। गृहपति एक अलग परिवारके गृहका अग्निदेव था, विशाम्पति ग्राम एवं समुदायका और वैश्वानर समुदायोंके

संघका अग्निदेव था। पुस्तकका जो भाग तीन अग्रियोंकी पूजाको समर्पित है, उसका मुख्य निष्कर्ष यही है कि पंथों और धार्मिक अवधारणाओंका विकास आर्योंके नागरिक गठनके विकासके साथ-साथ ही हुआ। इस पुस्तकके दूसरे भागमें उन्होंने वैदिक साहित्यमें अग्रिकी उपमाओंकी सूची दी है, जिसमें ८०० उपमाएँ संकलित हैं। इसकी सहायतासे वैदिक धर्म और साहित्यमें अग्रिके महत्त्व, कार्यों और लक्षणोंका सही-सही पता लगाया जा सकता है। इस ग्रन्थका फ्रांसीसी अनुवाद भी पेरिससे प्रकाशित हुआ है।

वैदिक भाषाका व्याकरण

कुलिकोव्स्कीके शिष्य पावेल रिस्तेर (सन् १८७२—१९३९)—ने खार्कोव विश्वविद्यालयके स्लाव-रूसी संकायमें शिक्षा प्राप्त की। उनकी प्रथम ऐतिहासिक कृति 'विष्णुको समर्पित ऋग्वेदकी ऋचाओंका अध्ययन' है। रिस्तेरने जर्मनीमें 'ऋग्वेद' के प्रसिद्ध ज्ञाता कार्ल गेल्डनरसे भी शिक्षा प्राप्त कर संस्कृतके अतिरिक्त पालि और बँगला-भाषा भी सीखी। उन्होंने ऋग्वेदसे लेकर बीसवीं शताब्दीके बँगला कवियोंकी कृतियोंका अनुवाद भी किया है। वर्तमान समयमें रूसी महिला भारत-विद्याविद् त० येलिजारेन्कोवा वैदिक साहित्यपर कार्य कर रही हैं। उन्होंने वैदिक भाषा—'ऋग्वेद' की शैली और 'अथर्ववेद'—के मन्त्रों आदिपर कई लेख प्रकाशित किया है। उन्होंने

सन् १९८२ में 'वैदिक भाषाका व्याकरण' लिखा है, जिसमें मन्त्रोंकी भाषाका सभी स्तरोंपर एककालिक वर्णन किया गया है। इसमें वैदिक पाठोंकी शब्द तथा अर्थ-रचनाका अध्ययन किया गया है। इस समय वे 'ऋग्वेद' का विस्तृत टीकासहित पूर्ण अनुवाद तैयार कर रही हैं। एक अन्य विद्वान् एर्मनकी पुस्तक 'वैदिक साहित्यके इतिहासकी रूपरेखा' में ऋग्वेदसे उपनिषदों और वेदाङ्गोंतकका सविस्तार सिंहावलोकन किया गया है। सेरेब्रयाकोव नामक एक अन्य रूसी भारत-विद्याविद्ने 'प्राचीन भारतीय साहित्यकी रूपरेखा' पुस्तक सन् १९७१ में प्रकाशित करायी, जिसमें वैदिक युगसे लेकर क्षेमेन्द्र और सोमदेव-जैसे मध्ययुगीन लेखकोंतकके भारतीय साहित्यके इतिहासकी परिघटनाओंका विवरण है।

इस प्रकार हम देखते हैं कि रूसी भारत-विद्याविद् कितने लगन, कठोर परिश्रम और गहन अध्ययनके साथ वेदोंका चिन्तन-मनन कर रहे हैं। वे वेदमें संनिहित ज्ञानके अथाह भण्डारकी न केवल खोज कर उसका विश्लेषण ही कर रहे हैं, वरन् रूसमें निवास करनेवाली करोड़ों जनताको भी इससे सुपरिचित करानेका प्रयास कर रहे हैं, जो वेदोंके बारेमें बहुत कुछ जानने-समझनेके लिये उत्सुक हैं। निःसंदेह यह भारतके प्राचीन ग्रन्थ वेदके प्रति रूसी जनताकी गहरी आस्था, ज्ञान-पिपासा एवं अभिरुचिका द्योतक है।



वेद कथा